

विवक रीविज़न मॉड्यूल
(यू.पी.एस.सी. प्रीलिम्स 2024) भूगोल

भारतीय कृषि



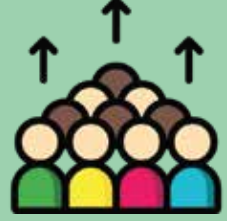
भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषताएं



खेती के तहत दर्ज क्षेत्रफल का उच्च प्रतिशत



निर्वाह कृषि



कृषि पर जनसंख्या का दबाव



मौसमी प्रतिरूप जैसे रबी, खरीफ, जायद



मानसून पर निर्भरता

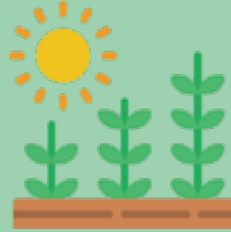


खाद्य फसलों की प्रधानता

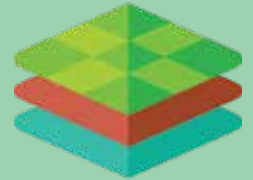
भारतीय कृषि की समस्याएं



भूमि विखंडन और प्रच्छन्न बेरोजगारी



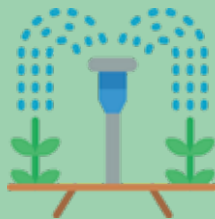
फसल विविधीकरण का अभाव



कम उत्पादकता और भूमि सुधार में विफलता



खाद, उर्वरक और जैवनाशकों का कम उपयोग



सिंचाई और मशीनीकरण का अभाव



कृषि विपणन और भंडारण सुविधाओं का अभाव

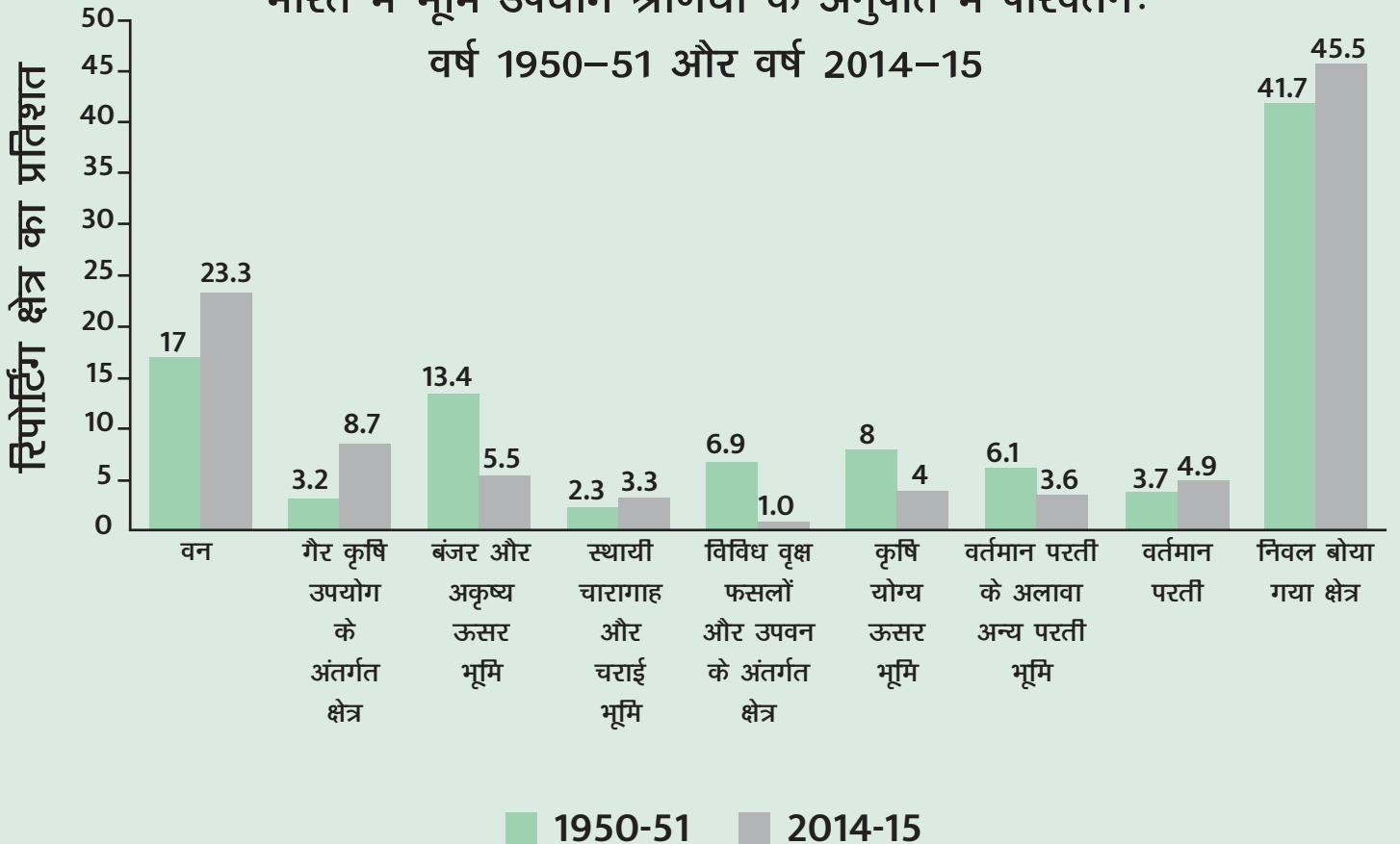
भूमि उपयोग की श्रेणियां

भू-राजस्व रिकॉर्ड्स में शामिल भूमि-उपयोग की श्रेणियां इस प्रकार हैं:

- वर्तमान परती के अलावा अन्य परती भूमि: वह भूमि जिस पर 1 से 5 वर्ष तक खेती नहीं की गई हो।
- निवल बोया गया क्षेत्र: वह भूमि जिस पर फसल बोई जाती है।
- वर्तमान परती: जिस पर एक वर्ष या एक वर्ष से कम समय तक खेती न की गई है।
- कृषि योग्य बंजर भूमि: वह भूमि जो 5 वर्ष से अधिक समय से परती या कृषि रहित है।
- वृक्ष वाली विविध फसलों और वृक्षों के समूह (उपवन) के अंतर्गत क्षेत्र।
- स्थायी चरागाहों के अधीन क्षेत्र।
- गैर-कृषि उपयोग के अंतर्गत भूमि।
- ऊसर और बंजर भूमि: इन्हें खेती के अंतर्गत शामिल नहीं किया जा सकता है।
- वन।

भूमि उपयोग में बदलाव

भारत में भूमि उपयोग श्रेणियों के अनुपात में परिवर्तन:
वर्ष 1950-51 और वर्ष 2014-15



इस संदर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं:

निष्कर्ष-1



प्रवृत्ति

गैर-कृषि उपयोग के तहत क्षेत्र के मामले में वृद्धि की दर सबसे अधिक है। ऊसर भूमि और कृषि भूमि का गैर-कृषि उद्देश्यों के लिए उपयोग बढ़ रहा है।



कारण

इसका कारण भारतीय अर्थव्यवस्था की बदलती संरचना और शहरी तथा ग्रामीण दोनों बस्तियों के अंतर्गत क्षेत्रफल में विस्तार है।

निष्कर्ष-2



प्रवृत्ति

वन क्षेत्र की हिस्सेदारी में वृद्धि।



कारण

देश में वनाच्छादन में वृद्धि, वास्तविक वृद्धि के बजाय वन के तहत सीमांकित क्षेत्र में वृद्धि के कारण है।

निष्कर्ष-3



प्रवृत्ति

वर्तमान परती भूमि के रुझान में वर्षों के दौरान बहुत अधिक उतार-चढ़ाव हुआ है।



कारण

वर्षा की अनियमितता और फसल चक्र पर निर्भरता के कारण।

निष्कर्ष-4



प्रवृत्ति

निवल बोए गए क्षेत्र में वृद्धि।



कारण

कृषि कार्यों के लिए कृषि योग्य बंजर भूमि के उपयोग के कारण।

फसली मौसम

फसली मौसम	प्रमुख फसलों की खेती	
	उत्तरी राज्य	दक्षिणी राज्य
खरीफ जून-सितंबर	चावल, कपास, बाजरा मक्का, ज्वार, अरहर	चावल, मक्का, रागी, ज्वार, मूंगफली
रबी अक्टूबर-मार्च	गेहूं, चना, रेपसीड और सरसों, जौ	चावल, मक्का, रागी, मूंगफली, ज्वार
जायद अप्रैल-जून	सब्जियां, फल, चारा	चावल, सब्जियां, चारा

प्रमुख फसलें



फसल

- चावल



जलवायु
संबंधी दशाएं

- उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय पौधा
- तापमान: 22 डिग्री सेल्सियस से अधिक
- वर्षा: 100 से.मी. से अधिक
- मृदा: क्ले जलोढ़ मृदा

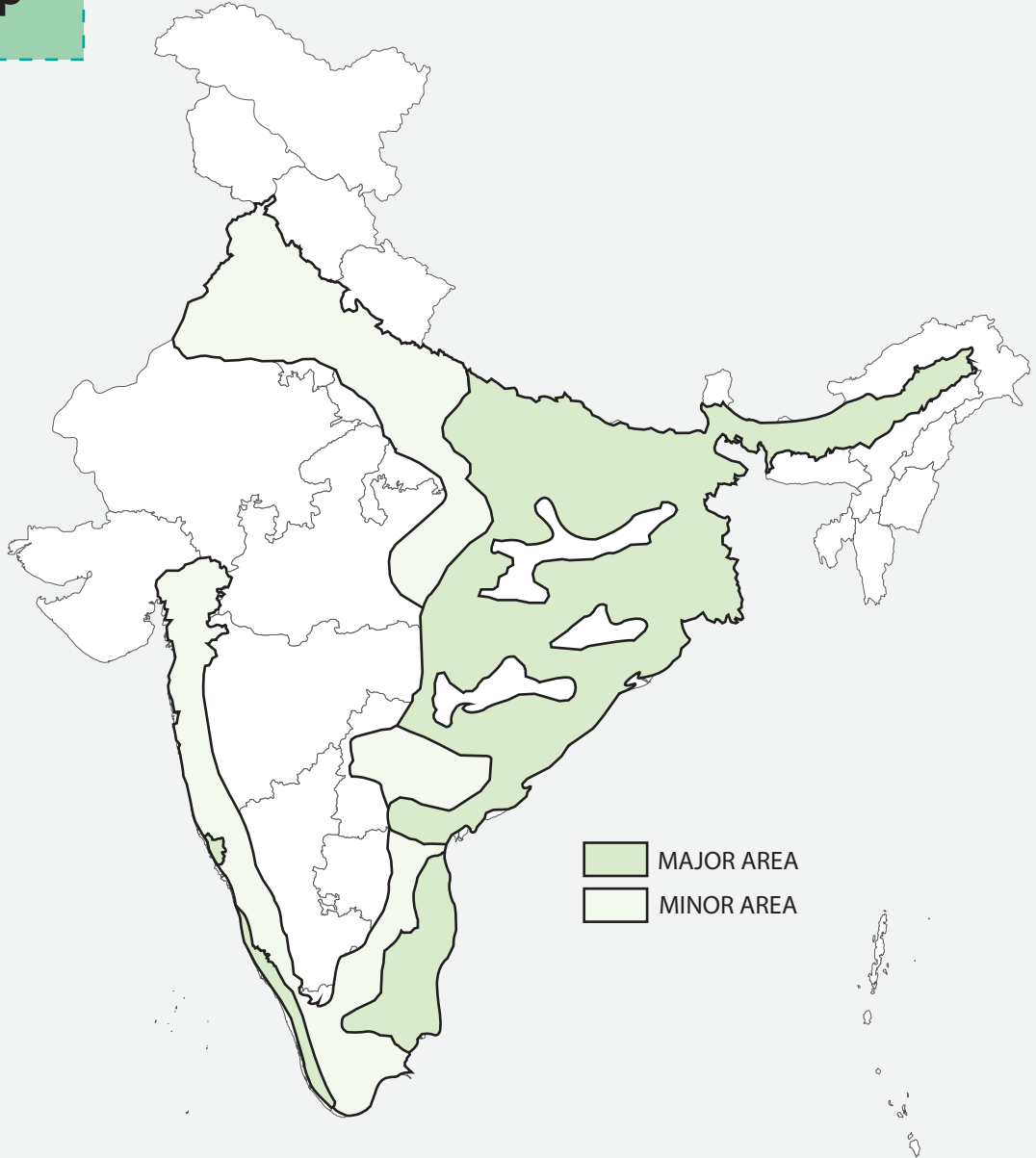


कृषि क्षेत्र

- पश्चिम बंगाल
- पंजाब
- उत्तर प्रदेश
- आंध्र प्रदेश
- तमिलनाडु



Map





फसल



जलवायु
संबंधी दशाएं



कृषि क्षेत्र

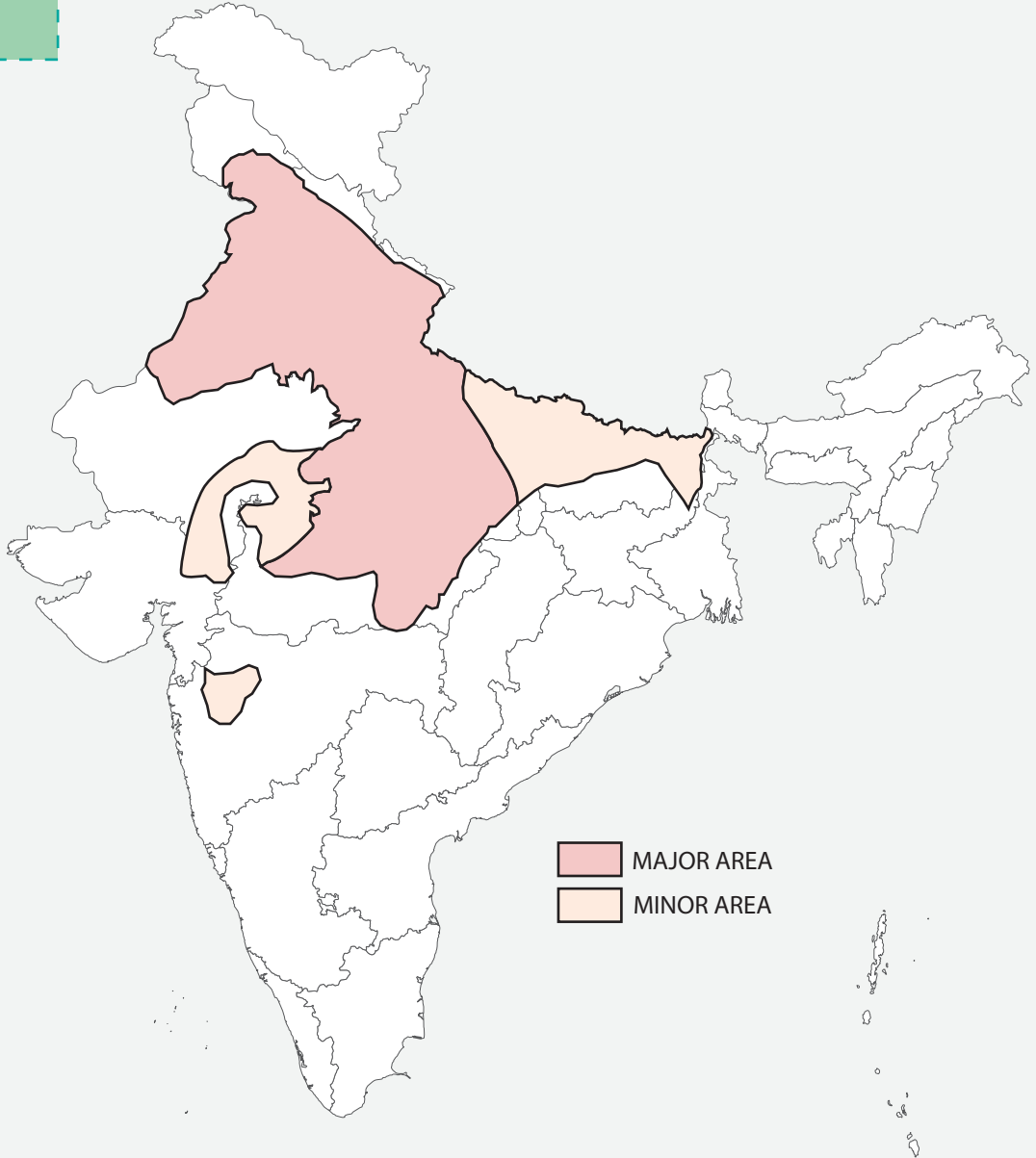
• गेहूँ

- शीतोष्ण कटिबंधीय फसल।
- तापमान: सर्दियों में तापमान 10 से 15 डिग्री सेल्सियस और गर्मियों में तापमान 21 डिग्री सेल्सियस से 26 डिग्री सेल्सियस तक आवश्यक
- वर्षा: 50 से.मी. से 75 से.मी.
- मृदा: दोमट या दोमट गठन वाली

- उत्तर प्रदेश,
- पंजाब
- हरियाणा
- राजस्थान
- मध्य प्रदेश



Map





फसल



जलवायु
संबंधी दशाएं



कृषि क्षेत्र

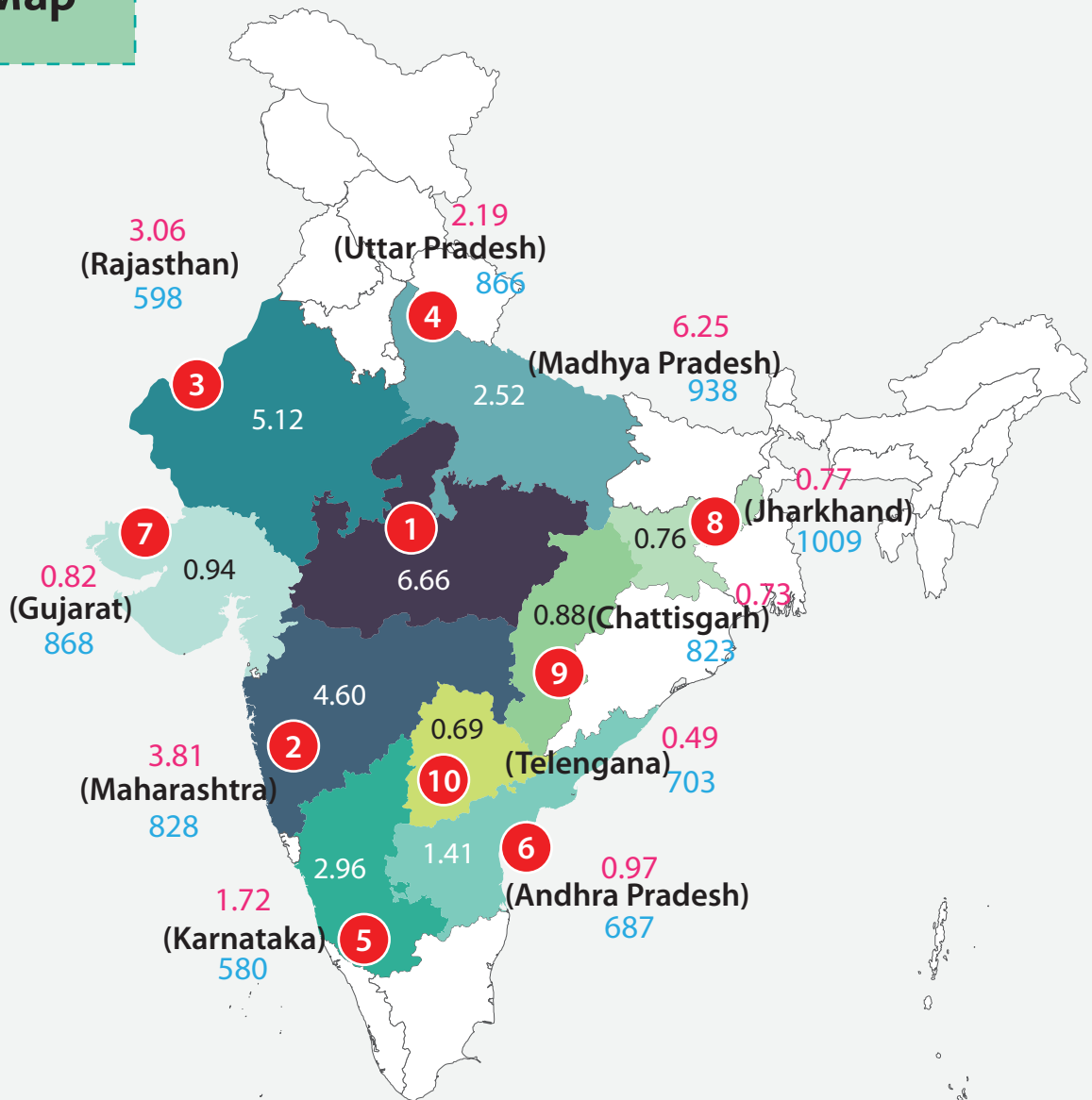
• दालें

- भारत दालों का एक प्रमुख उत्पादक है (दालों के कुल उत्पादन का पांचवां हिस्सा)
- तापमान: 20 डिग्री सेल्सियस से 27 डिग्री सेल्सियस
- वर्षा: 25 से.मी. से 60 से.मी.
- मृदा: बलुई-दोमट

- दक्कन के शुष्क क्षेत्र
- मध्यवर्ती पठारी क्षेत्र और देश का उत्तर-पश्चिमी भाग



Map



(Area in Million Hectares)

(Production in Million Tonnes)

(Yield in KG./Hectare)



फसल

• तिलहन



जलवायु
संबंधी दशाएं

- तापमान: 15 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस
- वर्षा: 30 से.मी. से 50 से.मी.
- मृदा: दोमट से क्ले दोमट

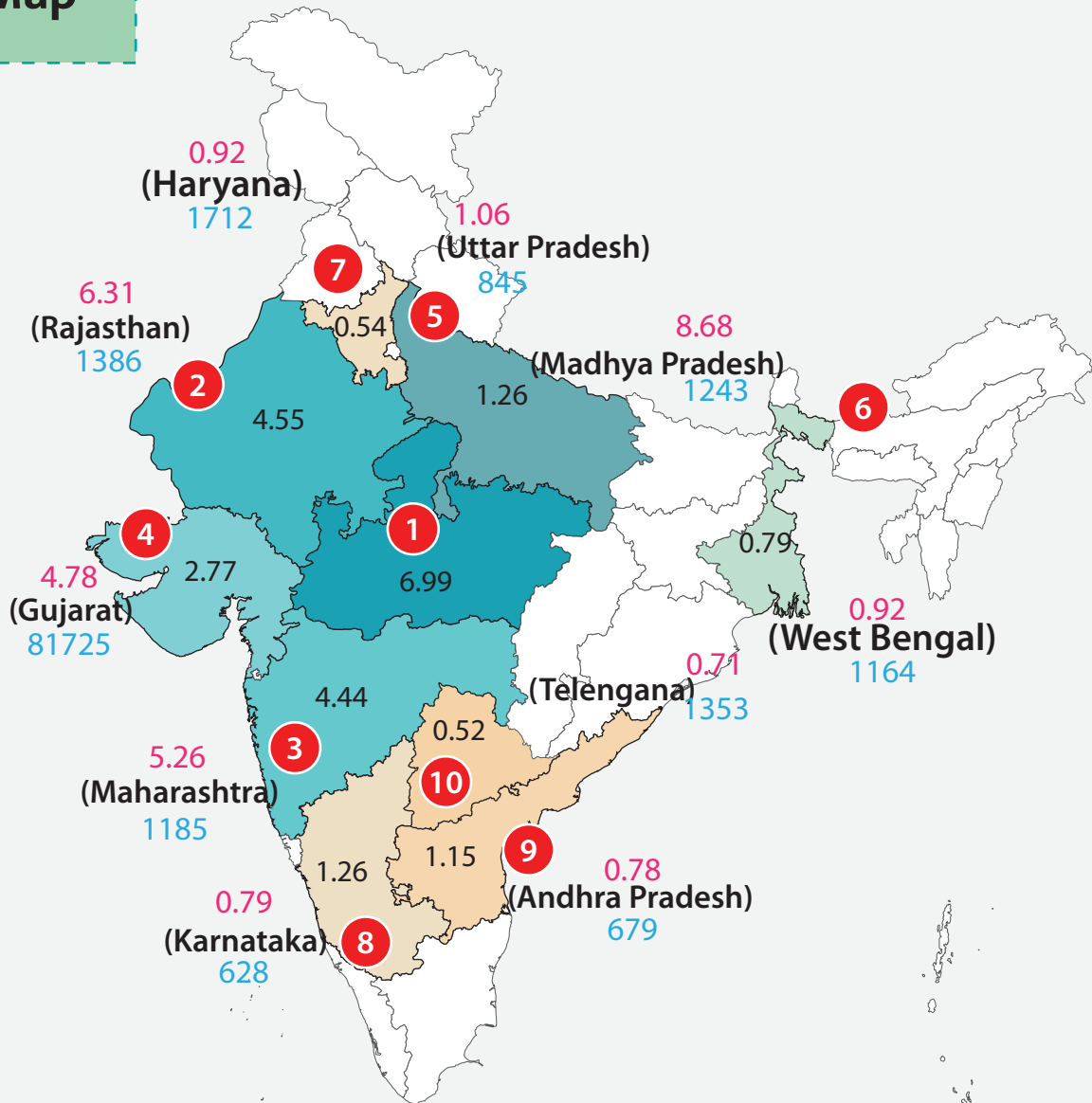


कृषि क्षेत्र

- मालवा के पठार का शुष्क क्षेत्र,
- मराठवाड़ा,
- गुजरात,
- राजस्थान,
- तेलंगाना,
- आंध्र प्रदेश का रायलसीमा क्षेत्र, और
- कर्नाटक का पठार



Map



(Area in Million Hectares)

(Production in Million Tonnes)

(Yield in KG./Hectare)



फसल

• कपास

- उष्णकटिबंधीय फसल,
- इसकी खेती देश के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में खरीफ के मौसम में की जाती है।
- कपास के पौधे पर फूल आने के समय आकाश बादल रहित होना चाहिए।
- तापमान: 21 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस।
- वर्षा: 50 से.मी. से 100 से.मी.
- मृदा: अच्छी जल निकास वाली दोमट और रेगुर मृदा।



जलवायु संबंधी दशाएं



कृषि क्षेत्र

- उत्तर पश्चिम में पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान,
- पश्चिम में गुजरात और महाराष्ट्र,
- दक्षिण में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु के पठार



Map





फसल

• जूट



जलवायु
संबंधी दशाएं

- तापमान: 24 डिग्री सेल्सियस से 35 डिग्री सेल्सियस
- वर्षा: 120 से.मी. से 150 से.मी.
- मृदा: अच्छी जल निकासी वाली जलोढ़ मृदा।

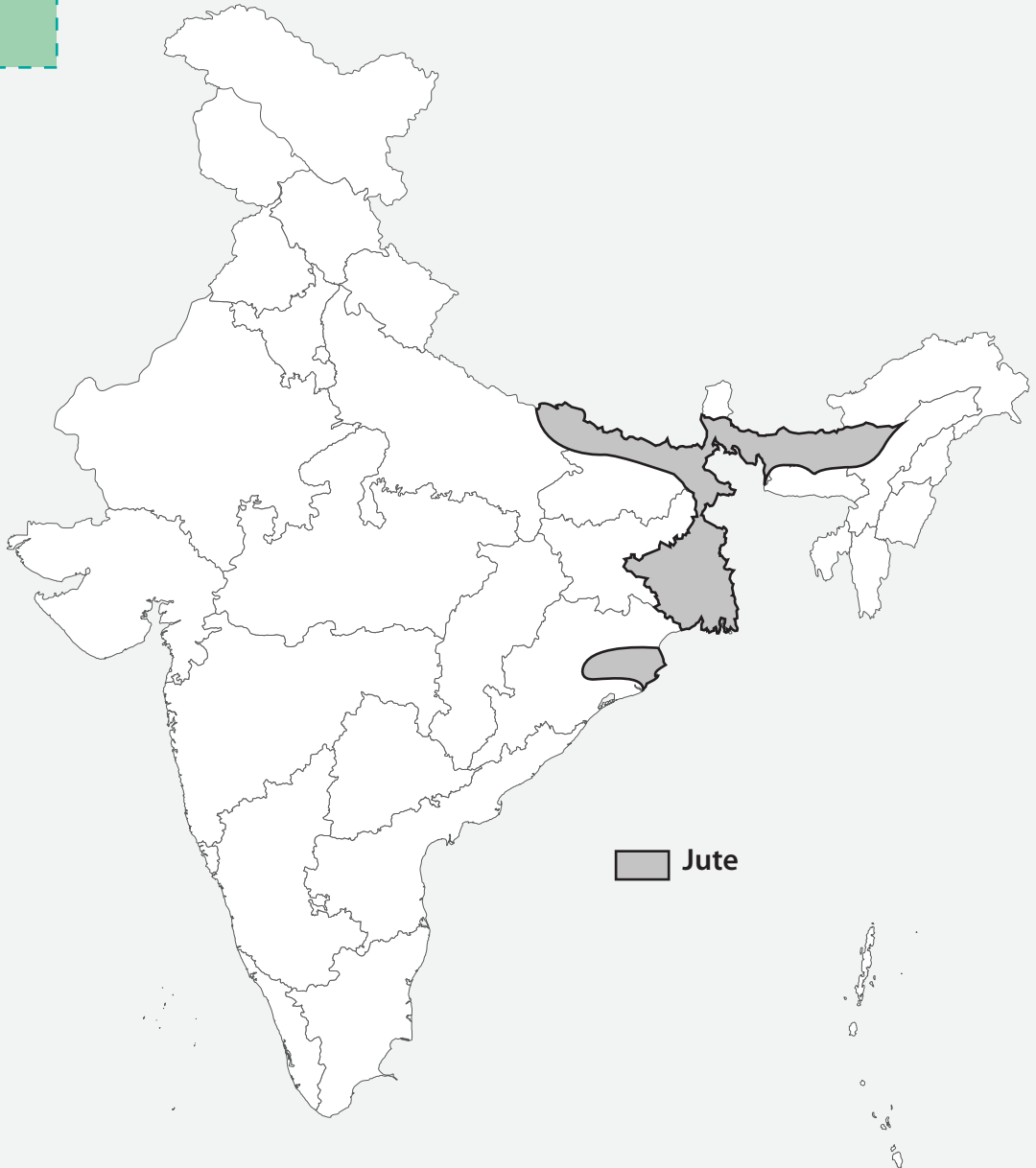


कृषि क्षेत्र

- पश्चिम बंगाल में देश का लगभग तीन-चौथाई जूट उत्पादन होता है।
- बिहार और असम



Map





फसल



जलवायु
संबंधी दशाएं



कृषि क्षेत्र

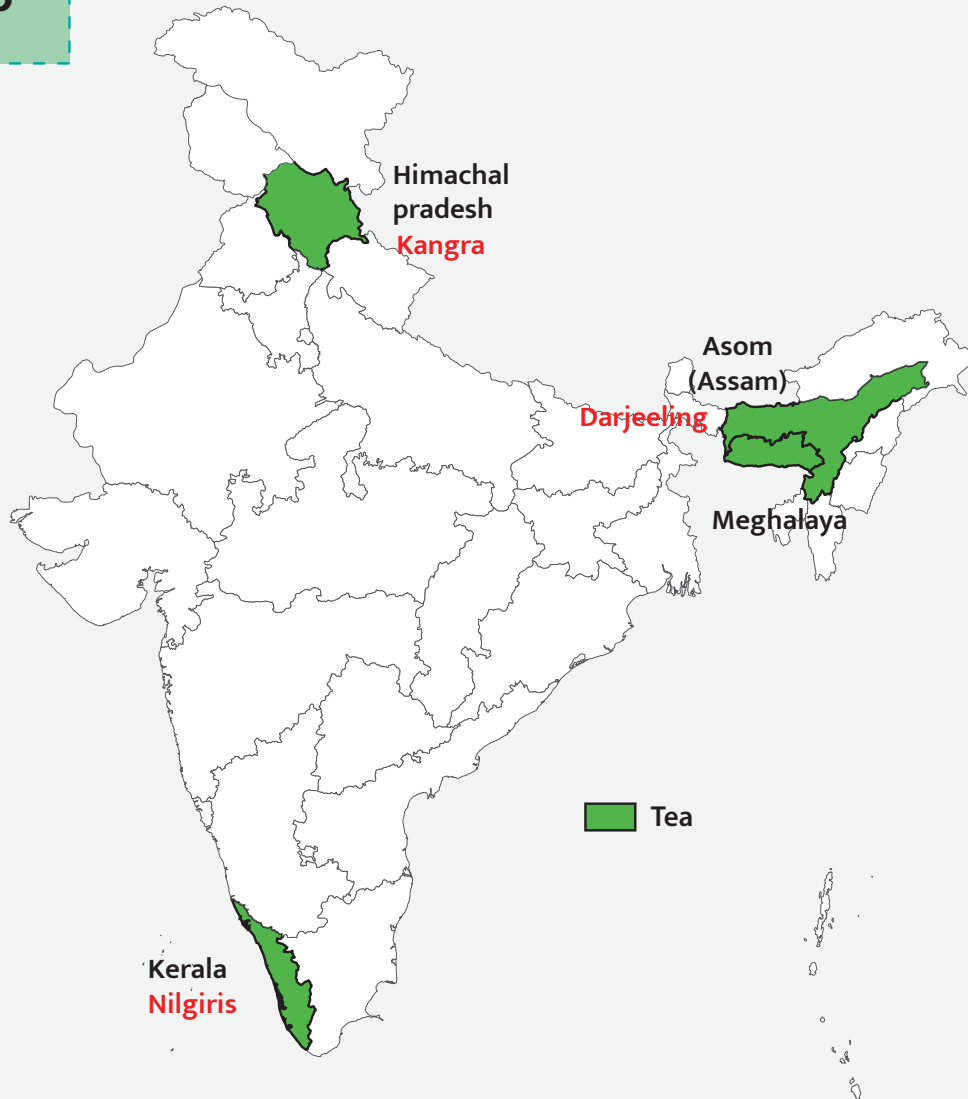
• चाय

- इसकी खेती आर्द्र और उप-आर्द्र उष्णकटिबंधीय तथा उपोष्ण-कटिबंधीय क्षेत्रों में पहाड़ी क्षेत्रों के तरंगित भू-भाग पर अच्छी जल निकासी वाली मृदा में की जाती है।
- तापमान: 20 डिग्री सेल्सियस से 35 डिग्री सेल्सियस
- वर्षा: 150 से.मी. से 300 से.मी.
- मृदा: अच्छी जल निकासी वाली हल्की दोमट मृदा।

- असम की ब्रह्मपुत्र घाटी,
- पश्चिम बंगाल का उप-हिमालयी क्षेत्र (दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी और कूचबिहार जिले),
- पश्चिमी घाट की नीलगिरी पहाड़ियां और कार्डमम पहाड़ियों के निचले ढलानों पर



Map





फसल



जलवायु
संबंधी दशाएं



कृषि क्षेत्र

• गन्ना

- उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की फसल।
- वर्षा आधारित परिस्थितियों में इसकी खेती उप-आर्द्र और आर्द्र जलवायु में की जाती है।
- इसके लिए गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है।
- तापमान: 21 डिग्री सेल्सियस से 27 डिग्री सेल्सियस
- वर्षा: 75 से.मी. से 100 से.मी.
- मृदा: अच्छी जल निकासी वाली जलोढ़, काली, लाल और भूरी रेगुर मृदा

- सिंधु-गंगा के मैदान में, इसकी खेती व्यापक पैमाने पर उत्तर प्रदेश (भारत का 2/5) में केंद्रित है।
- पश्चिमी भारत में महाराष्ट्र और गुजरात
- दक्षिण भारत में कर्नाटक, तमिलनाडु, और आंध्र प्रदेश



Map





फसल



जलवायु
संबंधी दशाएं



कृषि क्षेत्र

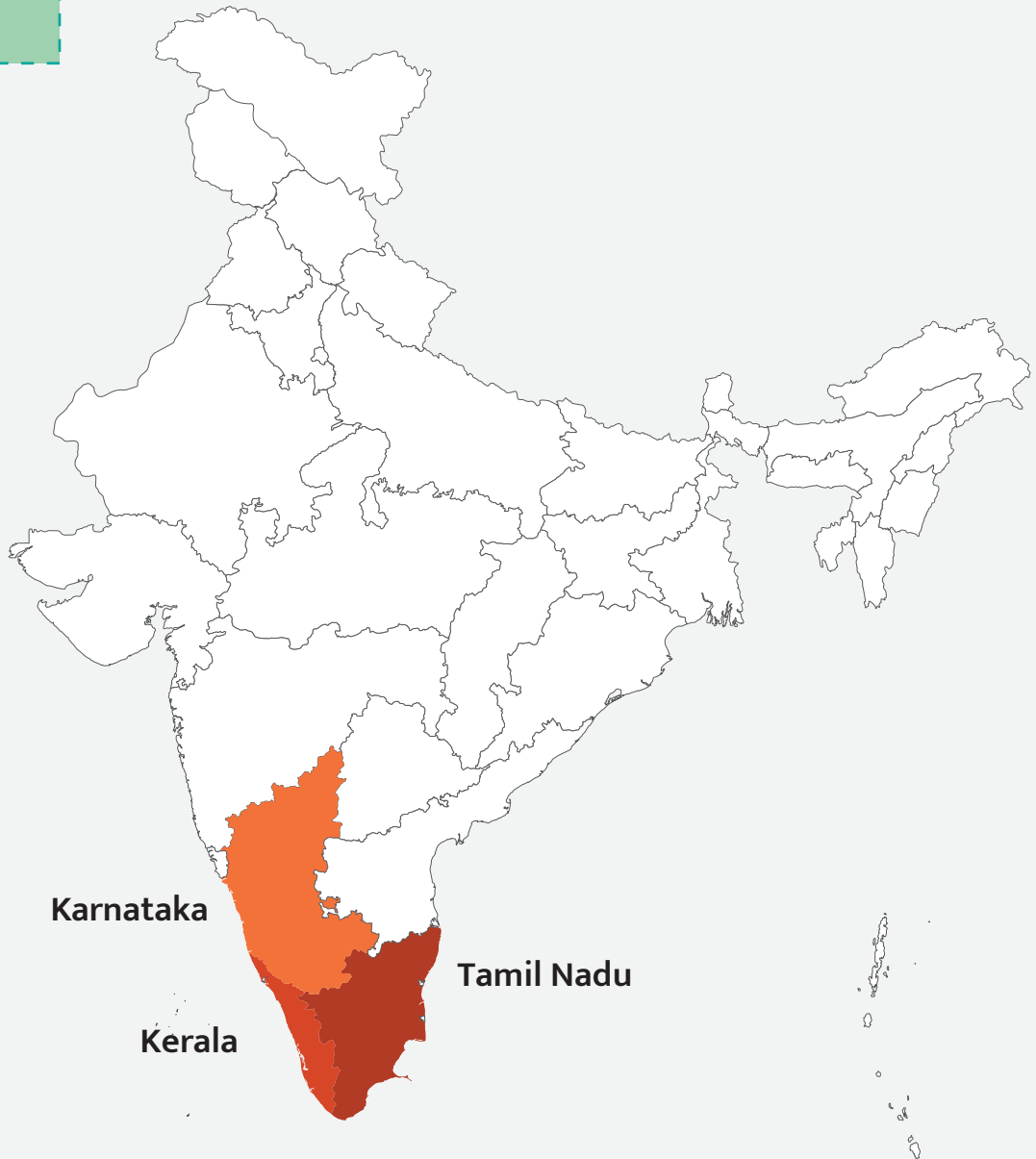
• कॉफी

- उष्णकटिबंधीय रोपण फसल
- तापमान: 15 डिग्री सेल्सियस से 28 डिग्री सेल्सियस
- वर्षा: 150 से.मी. से 250 से.मी.
- मृदा: अच्छी जल निकासी वाली जलोढ़ मृदा

- इसकी खेती कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में पश्चिमी घाट की उच्च भूमि पर की जाती है।



Map



Karnataka

Tamil Nadu

Kerala

अन्य फसलें

 फसल	 जलवायु संबंधी दशाएं	 आवश्यक मृदा	 कृषि क्षेत्र
ज्वार	तापमान: 26 डिग्री सेल्सियस से 33 डिग्री सेल्सियस वर्षा: लगभग 30 से.मी.	क्ले, रेगुर तथा दोमट मृदा	महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और गुजरात
बाजरा	तापमान: 25 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस वर्षा: 40 से.मी. से 50 से.मी.	बलुई दोमट, काली और लाल मृदा	महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा
मक्का	तापमान: 21 डिग्री सेल्सियस से 27 डिग्री सेल्सियस वर्षा: 50 से.मी. से 100 से.मी.	अच्छी जल धारण क्षमता के साथ कार्बनिक पदार्थों से भरपूर गहरी उपजाऊ अच्छी जल निकासी वाली मृदा	मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान और उत्तर प्रदेश
रागी	तापमान: 20 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस वर्षा: 50 से.मी. से 100 से.मी.	लाल, हल्की काली तथा दोमट मृदा	कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, बिहार, गुजरात और महाराष्ट्र
चना	तापमान: 20 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस वर्षा: 40 से.मी. से 50 से.मी.	अच्छी जल निकासी वाली उपजाऊ गाद और चिकनी दोमट मृदा	मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और महाराष्ट्र

मूंगफली	तापमान: 20 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस वर्षा: 50 से.मी. से 80 से.मी.	बलुई दोमट और काली मृदा	आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात और महाराष्ट्र
रेपसीड और सरसों	तापमान: 10 डिग्री सेल्सियस से 20 डिग्री सेल्सियस वर्षा: 50 से.मी. से 100 से.मी.	जलोढ़ मृदा	उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़
तिल	तापमान: 20 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस वर्षा: लगभग 50 से.मी.	अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट मृदा	ओडिशा, राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश
सूरजमुखी	तापमान: 15 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस वर्षा: लगभग 50 से.मी.	अच्छी जल निकास वाली दोमट मृदा	कर्नाटक, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, बिहार और उत्तर प्रदेश
सोयाबीन	तापमान: 15 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस वर्षा: 40 से.मी. से 60 से.मी.	नमी धारण करने वाली भुरभुरी दोमट मृदा	महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, गुजरात और छत्तीसगढ़
अलसी (स्पदेममक)	तापमान: 10 डिग्री सेल्सियस से 20 डिग्री सेल्सियस वर्षा: 50 से.मी. से 75 से.मी.	क्ले युक्त दोमट, गहरी काली मृदा और नमी-युक्त जलोढ़ मृदा	मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र
नारियल	तापमान: 20 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस वर्षा: लगभग 150 से.मी.	समुद्र के किनारे की असंगठित पारगम्य या रेतीली मृदा	केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक

रबड़	तापमान: 25 डिग्री सेल्सियस से 35 डिग्री सेल्सियस वर्षा: लगभग 300 से.मी.	लगभग 400 मीटर की ऊंचाई पर गहरी, समृद्ध और अच्छी जल निकासी वाली दोमट मृदा	केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
------	--	--	--

हरित क्रांति

1960 के दशक के मध्य में भारत ने पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सिंचित क्षेत्रों में रासायनिक उर्वरकों के साथ उच्च उत्पादन करने वाली किस्मों (HYVs) की खेती आरंभ की।



🌱 हरित क्रांति के घटक

1. HYV बीज,
2. सिंचाई,
3. उर्वरक, कीटनाशक और पीड़कनाशी का उपयोग,
4. कमान क्षेत्रों का विकास,
5. भू-जोत की चकबंदी,
6. भूमि सुधार,
7. कृषि विपणन, कृषि का मशीनीकरण और ग्रामीण विद्युतीकरण।

🎯 हरित क्रांति का प्रभाव

1. कृषि उत्पादन में वृद्धि – खाद्यान्नों के आयात में कमी।
2. नए क्षेत्रों में चावल और गेहूं से संबंधित प्रौद्योगिकियों का प्रसार।
3. किसानों की समृद्धि।
4. औद्योगिक विकास और ग्रामीण रोजगार।
5. किसानों के नजरिए में बदलाव।

हरित क्रांति के दोष

1. अंतर-फसली असंतुलन – केवल अनाज वाली फसलें हरित क्रांति से लाभान्वित हुईं।
2. क्षेत्रीय विषमताएं।
3. अंतर-वैयक्तिक असमानताओं में वृद्धि।
4. कुछ विशेषज्ञों को भूट बीजों की क्षमता के बारे में संदेह हैं।
5. हरित क्रांति द्वारा कृषि के मशीनीकरण के कारण बेरोजगारी में वृद्धि।
6. पर्यावरण प्रदूषण।

ICAR

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) केंद्रीय कृषि मंत्रालय के कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के तहत कार्यरत एक स्वायत्तशासी संस्था है।



ICAR को सौंपे गए कार्य:



- सतत कृषि के लिए योजना बनाना, उसका क्रियान्वयन करना, समन्वय करना और अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास को बढ़ावा देना।



- गुणवत्ता, मानव संसाधन विकास को सक्षम करने के लिए कृषि संबंधी शिक्षा में सहायता और समन्वय प्रदान करना।



- कृषि आधारित ग्रामीण विकास के लिए प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल और उसे अपनाने पर जोर देना तथा साथ ही, ज्ञान प्रबंधन एवं क्षमता विकास के लिए कार्य करना।



- कृषि अनुसंधान, शिक्षा और कृषि विस्तार के लिए नीति निर्माण में सहयोग करना तथा परामर्श देना।